**Today’s Poem – 27.09.2014**

**बाप समान खुदाई खिदमतगार बनना है**

**सबकी सेवा करना है**

**यह पुरूषोत्तम संगमयुग ही सबसे सुहावना और कल्याणकारी**

**इस युग में स्त्री पुरुष दोनों उत्तम बनते और परोपकारी**

**रावण राज्य में रहते पतित लोकलाज कुल की मर्यादा को छोड़ बेहद बाप की बात मानना**

**गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान रहना**

**आत्मा निर्लेप नहीं, अच्छे- बुरे कर्म करती**

**और उसका फल पाती**

**इस वैराइटी विराट लीला को अच्छी तरह समझना**

**इस राज को समझकर श्रेष्ठ कर्म करना**

**दिल से कहो मेरा बाबा**

**ओम् शान्ति !!!**

****